 ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

बालक की वृद्धि एवं विकास पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव

डा. सावित्री तड़ागी,

एसोसिएट प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष (शिक्षा शास्त्र),
विद्यान्त हिन्दू पी.जी. कालेज, लखनऊ।

वृद्धि एवं विकास पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव

बाल विकास की प्रक्रिया आन्तरिक एवं बाह्य कारणों से प्रभावित होती है। वंशानुगत कारक, शारीरिक कारक, बुद्धि, संवेगात्मक कारक, सामाजिक कारक इत्यादि बाल विकास को प्रभावित करने वाले आन्तरिक कारक हैं।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं वातावरणजन्य अन्य कारक बालक के विकास को प्रभावित करने वाले बाह्य कारक हैं।

मानव–व्यक्तित्व आनुवंशिकता और वातावरण की अन्तःक्रिया का परिणाम होता है।

आनुवंशिकता का स्वरूप तथा अवधारणा

आनुवंशिक गुणों के एक पीढी से दूसरी पीढी में संचरति होने की प्रक्रिया को आनुवंशिकता या वंशानुक्रम (Heredity) कहा जाता है। आनुवंशिक लक्षणों के पीढी दर पीढी संचरण की विधियों और कारणों के अध्ययन को आनुवंशिकी (Genetics) कहा जाता है। आनुवंशिकता को स्थिर सामाजिक संरचना माना जाता है। एक व्यक्ति के वंशानुक्रम में वे सब शारीरिक बनावटें, शारीरिक विशेषताएँ क्रियाएँ या क्षमताएँ सम्मिलित रहती हैं, जिनको वह अपने माता–पिता, अन्य पूर्वजों या प्रजाति से प्राप्त करता है। आनुवंशिकता जनन प्रक्रम का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम संतति के जीवों के समान डिजाईन (अकिल्पना) का होना है। आनुवंशिकता नियम इस बात का निर्धारण करते हैं जिनके द्वारा विभिन्न लक्षण पूर्ण विश्वसनीयता के साथ वंशागत होते हैं। संतति में जनक के अधिकतर आधारभूत लक्षण होते हैं। जिन्हें वंशागत लक्षण कहते हैं। ऐसे लक्षण पीढी दर पीढी संचरित होते रहते हैं। आनुवंशिकता का मूलाधार कोष (Cell) है। जिस प्रकार एक–एक ईंट को चुनकर इमारत बनती है ठीक उसी प्रकार से कोष के द्वारा मानव शरीर का निर्माण होता है। गर्भधाारण के समय माँ के अण्डाणु और पिता के शुक्राणु का कोषों में मिलन होता है ताकि एक नये कोष की रचना हो सके। कोषों के केन्द्रक (न्यूक्लियस) के कणों को गुणसूत्र (क्रोमोसोम्स) कहते हैं। गुणसूत्रों का अस्तित्व युग्मों में होता है। मानव कोष में 46 गुणसूत्र होते हैं जो 23 युग्मों में व्यवस्थित होते हैं। प्रत्येक युग्म में से एक माँ से आता है और दूसरा पिता से और ये गुणसूत्र आनुवंशिकी सूचना को संचारित करते हैं। प्रत्येक गुणसूत्र (क्रोमोसोम) में बहुत बडी संख्या मे जीन्स होते हैं, जोकि शारीरिक लक्षणों के वास्तविक वाहक हैं।

मॉण्टेग्यू और शील फेण्ड के अनुसार प्रत्येक गुणसूत्र में 3000 जीन्स पाए जाते हैं। जीन्स ही व्यक्ति की विभिन्न योग्यताओं एवं गुणों के निर्धारक होते हैं।

आनुवंशिकता का प्रभाव

शारीरिक लक्षणों पर प्रभाव

बालक के रंग–रूप, आकार, शारीरिक गठन, ऊँचाई इत्यादि के निर्धारण में उसके आनुवंशिक गुणों का महत्वपूर्ण हाथ होता है। माता के गर्भ में

ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

निषेचित युग्मज (जाइगोट) मिलकर क्रोमोसोम्स के विविध संयोजन (कॉम्बीनेशन्स) बनाते हैं। इस प्रकार एक ही माता–पिता के प्रत्येक बच्चे से विभिन्न जीन्स बच्चे में अपने अथवा रक्त संबंधियों के साथ अन्यों से अधिक समानताएँ होती हैं। आनुवंशिक संचारण (ट्रांसमिशन) एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया है। मनुष्य में हमें दृष्टिगोचर होने वाले अधिकांश अभिलक्षण, असंख्य जीन्स का संयोजन होता है। जीन्स के असंख्य प्रतिवर्तन (परम्युटेशन्स) और संयोजन (कॉम्बीनेशन्स) और मनोवैज्ञानिक अभिलक्षणों में अत्यधिक विभेदों के लिए जिम्मेदार होते हैं। केवल समान अथवा मोनोजाइगोटिक ट्विन्स में एकसमान सेट के गुणसूत्र (क्रोमोसोम्स) और जीन्स होते हैं क्योंकि वे एक ही युग्मज (सिंगल जाइगोट) के द्विगुणन (डुप्लकेशन) से बनते हैं। अधिकांश जुडवाँ भ्रातृवत अथवा द्वियुग्मक होते हैं जो पृथक युग्मजों से विकसित होते हैं। यह भाइयों जैसे जुडवाँ भाई और बहन की तरह मिलते जुलते होते हैं, परन्तु वे अनेक प्रकार से परस्पर एक–दूसरे से भिन्न भी होते हैं। बालक के आनुवंशिक गुण उसकी वृद्धि एवं विकास को भी प्रभावित करते हैं। यदि बालक के माता–पिता गोरे हैं तो उनका बच्चा गोरा ही होगा, किन्तु यदि माता–वपता काले हैं तो उनके बच्चे काले ही होंगे। इसी प्रकार माता–पिता के अन्य गुण भी बच्चे में आनुवंशिक रूप से चले जाते हैं। इसके कारण कोई बच्चा अति प्रतिभाशाली एवं सुन्दर हो सकता है एवं कोई अन्य बच्चा शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर। जो बालक जन्म से ही दुबले– पतले, कमजोर, बीमार तथा किसी प्रकार की शारीररक बाधा से पीड़ित रहते हैं, उनकी तुलना में सामान्य एवं स्वस्थ बच्चे का विकास अधिक होना स्वाभाविक ही है। शारीरिक कमियों का स्वास्थ्य ही नहीं वृद्धि एवं विकास पर भी प्रवकूल प्रभाव पडता है। असन्तुलित शरीर, मोटापा, कम ऊँचाई, शारीरिक असुन्दरता इत्यादि बालक के असामान्य व्यवहार के कारण होते हैं। कई बार किसी दुर्घटना के कारण भी शरीर को क्षति पहुँचती है और इस क्षति का बालक के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

आनुवंशिकता (वंशानुक्रम) की परिभाषाएँ

जेम्स ड्रेवर ''शारीरिक तथा मानसिक विशेषताओं का माता–पिता से सन्तानों में हस्तान्तरण होना आनुवंशिकता है।"

रूथ बैनलेक्ट ''वंशानुक्रम माता–पिता से सन्तानों के प्रति होने वाले गुण है।"

पी जिसबट 'प्रकृति में पीढी का प्रत्येक कार्य कुछ जैविकीय अथवा मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को माता–पिता द्वारा उनकी सन्तानों में हस्तान्तरित करना ही आनुवांशिकता है।"

एच ए पेर्टसन एवं बुड्वर्थ ''व्यक्ति अपने माता पिता के माध्यम से पूर्वजों की जो विशेषतायें प्राप्त करता है, उसे वंशानुक्रम कहते हैं।''

जीव शास्त्रियों के अनुसार ''निषिक्त अण्ड में सम्भावित विद्यमान विशिष्ट गुणों का योग ही आनुवंशिकता है।"

बी. एन. झा, ''वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का योग है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि वंशानुक्रम या आनुवंशिकताः पूर्वजों या माता–पिता द्वारा सन्तानों में होने वाले गुणों का संक्रमण है। प्रत्येक प्राणी अपनी जातीय विशेषताओं के आधार पर शारीरिक, मानसिक गुणों का हस्तान्तरण सन्तानों में करते है। शारीरिक लक्षणों के वाहक जीन प्रखर अथवा प्रतिगामी दोनों प्रकार के हो सकते हैं। यह एक ज्ञात सत्य है कि किन्हीं विशेष रंगों के लिए पुरुष और महिला में रंगों को पहचानने की अंधता (कलर ब्लाइण्डनेस) अथवा किन्हीं विशिष्ट रंगों की संवेदना नारी में नर से अधिक हो सकती है। एक दादी और माँ, स्वयं

रंग–अंधता से ग्रस्त हुए बिना किसी नर शिशु को यह स्थिति हस्तान्तरित कर सकती है। ऐसी स्थिति इसलिए है क्योंकि यह विकृति प्रखर होती है, परन्तु महिलाओं में यह प्रतिगामी (रिसेसिव) होती है।

जीन्स जोड़े में होते हैं। यदि किसी जोड़े में दोनों जीन प्रखर होंगे तो उस व्यक्ति में वह विशिष्ट लक्षण दिखाई देगा (जैसे रंगों को पहचानने की अन्धता), यदि जीन प्रखर हो और दूसरा प्रतिगामी तो जो प्रखर होगा वह अस्तित्व में रहेगा।

प्रखर जीन आगे सम्प्रेषित हो जाएगा और यह अगली किसी पीढ़ी में अपने लक्षण प्रदर्शित कर सकता है। अतः किसी व्यक्ति में किसी विशिष्ट लक्षण के दिखाई देने के लिए प्रखर जीन ही जिम्मेदार होता है। जो अभिलक्षण दिखाई देते हैं और प्रदर्शित होते हैं, जैसे ऑखों का रंग, उन्हें समलक्षणी (फिनोटाइप्स) कहते हैं। प्रतिगामी जीन अपने लक्षण प्रदेर्शित नहीं करते, जब तक कि वे अपने समान अन्य जीन के साथ जोड़े नहीं बना लेते जो अभिलक्षण आनुवंशिक रूप से प्रतिगामी जीनों के रूप में आगे संचारित हो जाते हैं परन्तु वे प्रदर्शित नहीं होते उन्हें समजीनोटाइप (जीनोटाइप) कहते हैं।

बुद्धि पर प्रभाव

बुद्धि के अधिगम (सीखने) की योग्यता, समायोजन योग्यता, निर्णय लेने की क्षमता इत्यावि के रूप में परिभाषित किया जाता है। जिस बालक के सीखने की गति अधिक होती है, उसका मानसिक विकास भी तीव्र गति से होगा। बालक अपने परिवार, समाज एवं विद्यालय में अपने आपको किस तरह समायोजित करता है यह उसकी बुद्धि पर निर्भर करता है।

गोडार्ड का मत है कि मन्दबुद्धि माता–पिता की सन्तान मन्दबुद्धि और तीव्रबुद्धि माता–पिता की सन्तान तीव्रबुद्धि वाली होती है।

मानसिक क्षमता के अनुकूल ही बालक में संवेगात्मक क्षमता का विकास होता है। बालक में जिस प्रकार के संवेगों का जिस रूप में विकास होगा वह उसके सामाजिक, मानसिक, नैतिक, शारीरिक तथा भाषा सम्बन्धी विकास को पूरी तरह प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यदि बालक अत्यधिक क्रोधित या भयभीत रहता है अथवा यदि उसमें ईर्ष्या एवं वैमनस्यता की भावना अविक होती है, तो उसके विकास की प्रक्रिया पर इन सबका प्रतिकूल प्रभाव पडना स्वाभाविक ही है।

संवेगात्मक रूप से असन्तुलित बालक पढाई में या किसी अन्य गम्भीर कार्यों में ध्यान नहीं दे पाते, फलस्वरूप उनका मानसिक विकास भी प्रभावित होता है।

वातावरण का अर्थ

वातावरण का अर्थ पर्यावरण है। पर्यावरण दो शब्दों परि एवं आवरण के मिलने से बना है। परि का अर्थ होता है चारों ओर, आवरण का अर्थ होता है ढ़कना। इस प्रकार वातावरण अथवा पर्यावरण का अर्थ होता है चारों ओर घेरनेवाला। प्राणी या मनुष्य, जल, वायु, वनस्पति, पहाड, पठार, नदी, आदि से घिरा हुआ है यही सब मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। इसे वातावरण या पोषण के नाम से भी जाना जाता है। वातावरण मानव जीवन के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। मानव विकास में जितना योगदान आनुवंशिकता का है उतना ही वातावरण का भी। इसलिए कुछ मनोवैज्ञानिक वातावरण को सामाजिक वंशानुक्रम भी कहते हैं। व्हारवादी मनोवैज्ञानिकों ने वंशानुक्रम से अधिक वातावरण को महत्व दिया है।

वातावरण से तात्पर्य उन सभी चीजों से (जीन्स छोड़कर) होता है जो व्यक्ति को उत्तेजित और प्रभावित करता है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति का वातावरण से तात्पर्य उन सभी प्रकार की उत्तेजनाओं से होता है जो गर्भधारण से मृत्यु तक उसे प्रभावित करते हैं। भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण या परिवेश भी उसके भीतर असंख्य व्यवहारगत विशेषताओं को उत्पन्न करते हैं।

वातावरण सम्बन्धी कारक

वातावरण में वे सब तत्व आते हैं, जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरम्भ करने के समय से प्रभावित किया है। गर्भावस्था से लेकर जीवनपर्यन्त तक अनेक प्रकार की दुर्घटनाएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं उसके विकास को प्रभावित करती हैं।

गर्भावस्था में माता को अच्छा मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने की सलाह इसीलिए दी जाती है कि उससे न केवल गर्भ के अन्दर बालक के विकास पर असर पडता है बल्कि आगे के विकास की बुनियाद भी मजबूत होती है। यदि माता का स्वास्थ्य अच्छा न हो, तो उसके बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य की आशा कैसे की जा सकती है? और यदि बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा न होगा तो उसके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पडना स्वाभाविक ही है। जीवन की घटनाओं का बालक के जीवन पर प्रभाव पडता है। यदि बालक के साथ अच्छा व्यवहार हुआ है, तो उसके विकास की गति सही होगी अन्यथा उसके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। जिस बच्चे को उसकी माता ने बचपन में ही छोड़ दिया हो वह माँ के प्यार के लिए तरसेगा ही। ऐसी स्थिति में उसके सर्वांगीण विकास के बारे में कैसे सोचा जा सकता है?

भौतिक परिवर्तन

इसके अन्तर्गत प्राकृतिक एवं भौगौलिक परिस्थितियॉ आती हैं। मनुष्य के विकास पर जलवायु का प्रभाव पडता है। जहाँ अधिक सर्दी पडती है या जहाँ अधिक गर्मी पडती है, वहाँ मनुष्य का विकास एक जैसा नहीं होता है। ठण्डे प्रदेशों के व्यक्ति सुन्दर, गोरे, सुडौल, स्वस्था एवं बुद्धिमान होते हैं। धैर्य भी इनमें अधिक होता है। जबकि गर्म प्रदेश के व्यक्ति काले, चिडचिडे तथा आक्रामक स्वभाव के होते हैं।

सामाजिक कारक

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है इसलिए उस पर समाज का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। सामाजिक व्यवस्था, रहन–सहन, परम्पराएँ, धार्मिक कृत्य, रीति–रिवाज, पारस्परिक अन्तःक्रिया और सम्बन्ध आदि बहुत–से तत्व हैं जो मनुष्य के शारीरिक, मानसिक तथा भावात्मक एवं बौद्धिक विकास को किसी–न–किसी ढंग से अवश्य प्रभावित करते हैं।

आर्थिक कारक

अर्थ अर्थत धन से केवल सुविधाएँ ही नहीं प्राप्त होती हैं बल्कि इससे पौष्टिक चीजें भी खरीदी जा सकती हैं, जिससे मनुष्य का शरीर विकसित होता है। धनहीन व्यक्तिं सुविधाओं के अभाव में हीन भावना विकसित हो जाती है जो विकास के मार्ग में बाधक है। आर्थिक वातावरण मनुष्य की बौद्धिक क्षमता को भी प्रभावित करता है। सामाविक विकास पर भी इसका प्रभाव पडता है।

सांस्कृतिक कारक

धर्म और संस्कृति मनुष्य के विकास को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। खाने का ढंग, रहन सहन का ढंग, पूजा–पाठ का ढंग, समारोह मनाने का ढंग, संस्कार का ढंग आदि हमारी संस्कृति हैं। जिन संस्कृतियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाहित हैं

उनका विकास ठीक ढंग से होता है लेकिन जहॉ अंधविश्वास और रूढिवादिता का समावेश है उस समाज का विकास सम्भव नहीं है।

वातावरण के कुछ महत्वपूर्ण प्रभाव

शारीरिक अन्तर का प्रभाव

व्यक्ति के शारीरिक लक्षण वैसे तो वंशानुगत होते हैं, किन्तु इस पर वातावरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पहाडी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का कद छोटा होता है जबकि मैदानी क्षेत्र में रहने वाले लोगों का शरीर लम्बा एवं गठीला होता है। अनेक पीढीयों के निवास स्थल में परिवतिन करने के बाद उपरोक्त लोगों के कद एवं रंग में अन्तर वातावरण के प्रभाव के कारण देखा गया है।

प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव

कुछ प्रजातियों की बौद्विक श्रेष्ठता का कारण वंशानुगत न होकर वातावरण होता है। वे लोग इसलिए अधिक विकास कर पाते हैं, क्योंकि उनके पास श्रेष्ठ शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण उपलब्ध होता है। यदि एक महान् व्यक्ति के पुत्र को ऐसी जगह पर छोड दिया जाय जहाँ शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण उपलब्ध न हो, तो उसका अपने पिता की तरह महान् बनना सम्भव नहीं हो सकता।

व्यक्तित्व पर प्रभाव

व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पडता है। कोई भी व्यक्ति उपयुक्त वातावरण में रहकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करके महान् बन सकता है। ऐसे कई उदाहरण हमारे आस–पास देखने को मिलते हैं जिनमें निर्धन परिवारों में जन्मे व्यक्ति भी अपने परिश्रम एवं लगन से श्रेष्ठ सफलताएँ प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं। न्यूमैन, फ्रीमैन और होलजिंगर ने इस बात को साबित करने के लिए 20 जोड़े जुड़वॉ बच्चों को अलग–अलग वातावरण में रखकर उनका अध्ययन किया। उन्होंने एक जोड़े के एक बच्चे को गाँव के फार्म पर और दूसरे को नगर में रखा। बडे होने पर इन दोनों बच्चों में पर्याप्त अन्तर पाया गया। फार्म का बच्चा अशिष्ट, चिन्ताग्रस्त और बुद्धिमान था। उसके विपरीत, नगर का बच्चा, शिष्ट, चिन्तामुक्त और अधिक बुद्धिमान था।

मानसिक विकास पर प्रभाव

गोर्डन नामक मनोवैज्ञानिक का मत है कि उचित सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण मिलने पर मानसिक विकास की गति : गति धीमी हो जात है। उसने यह बात नदियों के किनारे रहने वाले बच्चों का अध्ययन करके सिद्ध की। इन बच्चों का वातावरण गन्दा और समाज के अच्छे प्रभावों से दूर था। अध्ययन में पाया गया कि गन्दे एवं समाज के अच्छे प्रभावों से दूर रहने के कारण बच्चों के मानसिक विकास पर भी प्रतिकूल असर पडता था।

बालक पर बहुमुखी प्रभाव

वातावरण, बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि सभी अंगों पर प्रभाव डालता है। इसकी पुष्टि एवेराम्न का जंगली बालक के उदाहरण से की जा सकती है। इस बालक को जन्म के बाद एक भेड़िया उठा ले गया था और उसका पालन जंगली पशुओं के बीच में हुआ था। कुछ शिकारियों ने उसे 1799 ई. में पकड़ लिया। वह उनके समान ह आयु 11 अथवा 12 वर्ष की थी। उसकी आकृति पशुओं–सी हो गई थी। वह उनके समान ही हाथों–पैरों से चलता था। वह कच्चा मांस खाता था। उसमें मनुष्य के समान बोलने और विचार करने की शक्ति नहीं थी। उसको मनुष्य के समान सभ्य और शिक्षित बनाने के सब प्रयास विफल हुए।

आनुवंशिकता एवं वातावरण के बाल विकास पर भावों के शैक्षिक महत्व

विकास की वर्तमान विचारधारा में प्रकृति और पालन–पोषण दोनों को महत्व दिया गया है। आनुवंशिकता और परिवेश परस्पर इस प्रकार गुंथे हुए हैं कि इन्हें पृथक् करना असम्भव है और बच्चे पर प्रत्येक परस्पर अपना प्रभाव डालता है। इसलिए व्यक्ति के विकास की कुछ सार्वभौमिक विशेषताएँ होती हैं। और कुछ निजी विशेषताएँ होती हैं। आनुवंशिकता की भूमिका को समझना बहुत महत्वपूर्ण है और इससे भी अधिक लाभकारी है कि हम समझे कि परिवेश में कैसे सुधार किया जा सकता है? ताकि बच्चे की आनुवंशिकता द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर सर्वोत्तम सम्भावित विकास के लिए सहायता की जा सके। हमें साधारणतया यह प्रश्न सुनने क मिलता है कि बालक की शिक्षा और विकास में वंशानुक्रम अधिक महत्वपूर्ण है या वातावरण? यह प्रश्न पूछना यह पूछने के समान है कि मोटरकार के लिए इंजन अधिक महत्वपूर्ण है या पेट्रोल। जिस प्रकार मोटरकार के लिए इंजन और पेट्रोल का समान महत्व है, उसी प्रकार बालक के विकास के लिए वंशानुक्रम तथा वातावरण का समान महत्व है। वंशानुक्रम और वातावरण में पारस्परिक निर्भरता है। ये एक–दूसरे के पूरक, सहायक और सहयोगी हैं। बालक को मूल प्रवृतियाँ वंशानुक्रम से प्राप्त होती हैं, उनका विकास वातावरण में होता है, उदाहरण के लिए, यदि बालक में बौद्धिक शक्ति नहीं है, तो उत्तम–से–उत्तम वातावरण भी उसका मानसिक विकास नहीं कर सकता है। इसी प्रकार बौद्धिक शक्ति वाला बालक प्रतिकूल वातावरण में अपना मानसिक विकास नहीं कर सकता है। वस्तुतः बालक के सम्पूर्ण व्यवहार की सृष्टि, वंशानुक्रम और वातावरण की अन्तःक्रिया द्वारा होती है। शिक्षा की किसी भी योजना में वंशानुक्रम और वातावरण को एक–दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है, उसी प्रकार वंशानुक्रम और वातावरण का भी सम्बन्ध है। अतः बालक के सम्यक् विकास के लिए वंशानुक्रम और वातावरण का संयोग अनिवार्य है। बालक क्या है? वह क्या कर सकता है? उसका पर्याप्त विकास क्यों नहीं हो रहा है? आदि प्रश्नों का उत्तर आनुवंशिकता एवं वातावरण के प्रभाव में निहित है। इनकी जानकारी का प्रयोग कर शिक्षक बालक के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, सभी प्रकार के विकासों पर आनुवंशिकता एवं वातावरण का प्रभाव पडता है। यही कारण है कि बालक की शिक्षा भी इससे प्रभावित होत है। अतः बच्चे के बारे में इस प्रकार की जानकारियॅा उसकी समस्याओं के समाधान में शिक्षक की सहायता करती हैं। बालक को समझकर ही उसे दिशा–निर्देश दिया जा सकता है। एक कक्षा में पढने वाले सभी बालकों का शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य एक जैसा नहीं होता है। शारीरिक विकास मानसिक विकास से जुड़ा है और जिसका मानसिक विकास अच्छा होता है, उसकी शिक्षा भी अच्छी होती है। वंशानुक्रम से व्यक्ति शरीर का आकार–प्रकार प्राप्त करता है। वातावरण शरीर को पुष्ट करता है। यदि परिवार में पौष्टिक भोजन बच्चे को दिया जाता है, तो उसकी माँसपेशियाँ, हड्डियाँ तथा अन्य प्रकार की शारीररक क्षमताएँ बढती हैं। बौद्धिक क्षमता के लिए सामान्यतः वंशानुक्रम ही जिम्मेदार होता है। इसलिए बालक को समझने के लिए इन दोनों कारकों को समझना आवश्यक है।

शिक्षक के लिए वंशानुक्रम व वातावरण का महत्व

शिक्षक के लिए वंशानुक्रम और वातावरण का क्या महत्व है और वह उनके ज्ञान से अपना और अपने छात्रों का किस प्रकार हित कर सकता है,

इस पर हम अलग–अलग शीर्षकों के अन्तर्गत विचार कर रहे हैं–

वंशानुक्रम का महत्व

वंशानुक्रम के कारण बालकों में शारीरिक विभिन्नता होती है। शिक्षक इस ज्ञान सम्पन्न होकर उनके शारीरिक विकास में योग दे सकता है।

वंशानुक्रम के कारण बालकों की जन्मजात क्षमताओं में अन्तर होता है। शिक्षक इस बात को ध्यान में रखकर कम प्रगति करने वाले बालकों को अधिक प्रगति करने में योग दे सकता है।

बालकों और बालिकाओं में लिंगीय भेद वंशानुक्रम के कारण होता है, जिससे विभिन्न विषयों में उनकी योग्यता कम या अधिक होती है। शिक्षक इस ज्ञान से उनके लिए उपयुक्त विषयों के अध्ययन की व्यवस्था कर सकता है।

वंशानुक्रम के कारण बालकों में अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ होती हैं, जो उनके विकास के साथ–साथ अधिक ही अधिक स्पष्ट होती जाती हैं। शिक्षक, बालकों की इन विभिन्नताओं का अध्ययन करके इनके अनुरूप शिक्षा का आयोजन कर सकता है।

वंशानुक्रम के कारण बालकों की सीखने की योग्यता में अन्तर होता है। शिक्षक इस ष्ज्ञान से अवगत होकर देर में सीखने वाले बालकों के प्रति सहनशील और जल्दी सीखने वाले चालकों को अधिक कार्य दे सकता है।

बालकों को वंशानुक्रम से कुछ प्रवृत्तियाँ प्राप्त होती हैं, जो वांछनीय और अवांछनीय – दोनों प्रकार की होती है। शिक्षक इन प्रवृत्तियों का अध्यन करके वांछनीय प्रवृत्तियों का विकास और अवांछनीय प्रवृत्तियों का दमन या मार्गान्तरीकरण कर सकता है।ष्

वुडवर्थ के अनुसार– देहाती बालकों की अपेक्षा शहरी बालकों मानसिक स्तर की श्रेष्ठता आंशिक रूप से वंशानुक्रम के कारण होती है। शिक्षक इस ज्ञान से युक्त होकर अपने शिक्षण को उनके मानसिक स्तरों के अनुरूप बना सकता है।

वंशानुक्रम का एक नियम बताता है कि योग्य माता–पिता के बच्चे अयोग्य और अयोग्य माता–पिता के बच्चे योग्य हो सकते हैं। इस नियम को भली–भाँति समझने वाला शिक्षक ही बालकों के प्रति उचित प्रकार का व्यवहार कर सकता है।

वातावरण का महत्व

बालक अपने परिवार, पड़ौस, मुहल्ले और खेल के मैदान में अपना पर्याप्त समय व्यतीत करता है और इससे प्रभावित होता है। शिक्षक इन स्थानों के वातावरण को ध्यान में रखकर ही बालक का उचित पथ–प्रदर्शन करता है।

सोरेन्सन के अनुसार शिक्षा का उत्तम वातावरण बालकों की बुद्धि और ज्ञान की वृद्धि में प्रशंसनीय योग देता है। इस बात की जानकारी रखने वाला शिक्षक अपने छात्रों के लिए उत्तम शैक्षिक वातावरण प्रदान करे की चेष्टा कर सकता है।

रूथ बैंडिक्ट के अनुसार व्यक्ति जन्म से ही एक निश्चित सांस्कृतिक वातावरण में रहता है और उसके आदर्शों के अनुरूप ही आचरण करता है। इस तथ्य को जानने वाला शिक्षक, बालक को अपना सांस्कृतिक विकास करने में योग दे सकता है।

अनुकूल वातावरण में जीवन का विकास होता है और व्यक्ति उत्कर्ष की ओर बढ़ता है। इस बात को समझने वाला शिक्षक अपने छात्रों की रुचियों, प्रवृत्तियों और क्षमताओं के अनुकूल वातावरण प्रदान करके उनको उत्कर्ष की ओर बढ़ने में सहायता दे सकता है।

यूनेस्को के कुछ विशेषज्ञों का कथन है कि वातावरण का बालकों की भावनाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और उससे उनके चरित्र का निर्माण भी होता है। इस कथन में विश्वास करके शिक्षक, बालकों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण कर सकता है, जिससे न केवल उनकी भावनाओं का संतुलित विकास हो, वरन् उनके चरित्र का भी निर्माण हो ।

वातावरण, बालक के विकास की दिशा निश्चित करता है। वातावरण ही निश्चित करता है कि बालक बड़ा होकर अच्छा या बुरा, चरित्रवान् या चरित्रहीन, संयमी या व्यभिचारी, व्यापारी या साहित्यकार, देश प्रेमी या देशद्रोही बनेगा। इस तथ्य पर मनन करने वाला शिक्षक अपने छात्रों के लिए ऐसे वातावरण का सृजन कर सकता है, जिससे उनका विकास उचित दिशा में हो।

प्रत्येक समाज का एक विशिष्ट वातावरण होता है। बालक को इसी समाज के वातावरण से अपना अनुकूलन करना पड़ता है। इस बात से भली–भाँति परिचित होने वाला शिक्षक, विद्यालय को लघु समाज का रूप प्रदान करके बालकों को अपने वृहत् समाज के वातावरण से अनुकूलन करने की शिक्षा दे सकता है।

वातावरण के महत्व को समझने वाला शिक्षक, विद्यालय में बालकों के लिए ऐसा वातावरण उपस्थित कर सकता है, जिससे उनमें विचारों की उचित अभिव्यक्ति, शिष्ट सामाजिक व्यवहार, कर्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान, स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण आदि गुणों का अधिकतम विकास हो।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षक के लिए वंशानुक्रम और वातावरण–दोनों का ज्ञान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के ज्ञान से सम्पन्न होकर ही वह अपने छात्रों का वांछित और सन्तुलित विकास कर सकता है। इसीलिए सोरेन्सन का मत है – ''शिक्षक के लिए मानव विकास पर वंशानुक्रम और वातावरण के सापेक्षिक प्रभाव और पारस्परिक सम्बन्ध का ज्ञान विशेष महत्व रखता है।''

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि वातावरण तथा वंशानुक्रम एक सिक्के के दो पक्ष हैं। ये एक–दूसरे के लिये अनिवार्य हैं। मानव विकास के लिये इनको पृथक् नहीं किया जा सकता।

सारांश में, हम कह सकते हैं कि बालक के विकास के लिए वंशानुक्रम और वातावरण का समान महत्व है। उसके निर्माण में दोनों का समान योग है। इनमें से एक की भी अनुपस्थिति में उसका सम्यक् विकास असम्भव है। गैरेट का कथन है– ''इससे अधिक निश्चित बात और कोई नहीं है कि वंशानुक्रम और वातावरण एक–दूसरे को सहयोग देने वाले प्रभाव हैं और दोनों ही बालक की सफलता के लिए अनिवार्य हैं।''

संदर्भ सूची

1. डा. मालती सारस्वत, शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
2. डा. ओ. पी. शुक्ल, शिक्षा मनोविज्ञान, भारत बुक सेन्टर, अशोक मार्ग, लखनऊ।
3. पी.डी. पाठक, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. डा. राम शकल पाण्डेय, शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. डा. सीताराम जायसवाल, प्रकाशन केन्द्र, सीतपुर रोड, लखनऊ।